(B.A I Hons) I paper

सांख्य दर्शन

कारण-कार्य सिद्धान्त

Ajanta
Page No.
Date

कारण-कार्य सिद्धान्त भारतीय तथा पाश्चात्य दार्शनिकों के लिए एक महत्वपूर्ण विवाद का विषय रहा है। जहाँ पाश्चात्य दार्शनिक इस सिद्धान्त की व्याख्या मुख्यतः रूप से तार्किक सिद्धान्त के रूप में देते हैं, वहीं भारतीय दार्शनिक इस सिद्धान्त की व्याख्या तत्वशास्त्रीय सिद्धान्त के रूप में देते हैं।

सांख्य का कारण-कार्य सिद्धान्त सत्कार्यवाद के रूप में जाना जाता है। भारतीय दार्शनिकों के अनुसार किसी भी कार्य-कारण सिद्धान्त में प्रश्न उठता है कि क्या कार्य अपनी उत्पत्ति के पूर्व उपादान कारण में विद्यमान रहता है या नहीं। इस प्रश्न का उत्तर भारतीय दार्शनिकों ने भावात्मक तथा निषेधात्मक दोनों रूपों में दिया है। सांख्य का सत्कार्यवाद इस प्रश्न का भावात्मक उत्तर देता है। सत्कार्यवाद के अनुसार कार्य उत्पत्ति के पूर्व उपादान कारण में अव्यक्त रूप से मौजूद रहता है।

सत्कार्यवाद शब्द सत् + कार्य + वाद के संयुक्त होने से बना है। इसलिए सत्कार्यवाद का शाब्दिक अर्थ जो उत्पत्ति के पूर्व कारण में कार्य की सत्ता स्वीकार करता है।

न्याय-वैशेषिक सांख्य के कार्य-कारण सिद्धान्त की व्याख्या निषेधात्मक रूप में देता है। उनके मत को असत्कार्यवाद अथवा आरम्भ-वाद की संज्ञा दी जाती है। इनके अनुसार कार्य अपनी उत्पत्ति के पूर्व उपादान

कारण में वर्तमान नहीं रहता है
सांख्य दर्शन सत्कार्य वाद को सिद्ध करने के लिए कुछ युक्तियों का सहारा लिया है
① यदि कार्य की सत्ता को कारण में अस्वीकृत माना जाये तो फिर कारण से कार्य का निर्माण नहीं होगा जो असत् है उससे सत् का निर्माण असम्भव है नमक में चीनी का अभाव है तो हम नमक से चीनी का निर्माण नहीं कर सकते
② यदि कार्य की सत्ता को उत्पत्ति के पूर्व नहीं माना जाये तो कार्य को निर्मित हो जाने पर हमें मानना पड़ेगा कि असत् से सत् का निर्माण हुआ है परन्तु ऐसा सम्भव नहीं है
③ विशेष कार्य के लिए विशेष कारण की आवश्यकता होती है। एक व्यक्ति जो घड़ी का निर्माण करना चाहता है वह द्रव्य की मांग करता है। मिट्टी की घड़ा बनाने के लिए मिट्टी की आवश्यकता होती है। इससे प्रमाणित होता है कि कार्य अव्यक्त रूप से कारण में मौजूद है
④ कार्य और कारण का सम्बन्ध अभेद रूप में माना जाता है कार्य और कारण एक दूसरे के पूरक हैं सांख्य अपने कारण-कार्य सिद्धान्त सत्कार्यवाद का प्रतिपादन करता है इस सिद्धान्त को सांख्य दर्शन के अतिरिक्त योग, शंकर, रामानुज ने भी अपनाया है भगवद् गीता के "नासतो विद्यते भावो ना भावो विद्यते सतः" कहा है कि इस प्रकार भी सांख्य के सत्कार्यवाद के सिद्धान्त को मान देता है।